वृत्तपत्राचे नांव :- मराठी दुनिया
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- इंदौर
वृत्तपत्र पान नं. :- 9
दिनांक :- 10.06.2001
कटिंग नंबर: .....

हमारे जीवन का अंग थी वैदिक शिक्षा

मनोहरलाल तिवारी

भारतीय जीवन में वेद अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। भारतीय सभ्यता एवं शिक्षा की पृष्ठभूमि में वेद ही थे। वैदिक कालीन युग (ई.पू. १४०० तक) में शिक्षा के पाठ्यक्रम में व्याकरण, छंद, ज्योतिष, कल्प आदि विषय प्रमुख थे। इन विषयों का सम्मिलित नाम वेदांग था। उत्तर वैदिक काल (ई.पू. ७०० तक) को 'ब्राह्मण अथवा उपनिषद काल' की संज्ञा भी दी जाती है। वैदिक तथा उत्तर वैदिक काल में शिक्षा का मूल ध्येय मानव का बाह्य और आंतरिक विकास था। यह शिक्षा मानवीय तथा मूल्यगत आधार प्रदान करती थी।

बौद्ध कालीन शिक्षा का मूल उद्देश्य वेदकालीन शिक्षा के समान ही रहा। इस समय जगद्गुरु शंकराचार्य (ई.पू. ७८८-८३०) का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने वैदिक धर्म का प्रतिष्ठापन करना अपने जीवन का प्रयोजन रख प्राचीन युग की परंपराओं और धारणाओं को पुनः सक्रिय किया। मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल में वेदों की उपेक्षा हुई। मुस्लिम राज्य की स्थापना के साथ ही इस्लाम के कट्टर अनुयायी शासकों ने भारतीय शिक्षा संस्थाओं को बहुत नुकसान पहुँचाया, अनेक ब्राह्मणीय तथा बौद्ध शिक्षा के केंद्र नष्ट कर दिए गए और असंख्य पुस्तकें जला दी गईं। तथापि जिन हिन्दू विद्यालयों ने इन विषय परिस्थितियों का सामना कर अपने को जीवित रखा, उनकी शिक्षण प्रणाली में मुस्लिम सरकारों ने विशेष हस्तक्षेप नहीं किया।

वर्ष १९१३ के पूर्व ईस्ट इंडिया कंपनी शासन की शिक्षा नीति मूलतः प्राच्य विचारधारा से प्रभावित थी। वैदिक साहित्य को सबसे बड़ी हानि ब्रिटिश काल में लार्ड मैकाले (१८३५) के पदासीन होने के बाद हुई। उसकी दृष्टि में भारतीय भाषाओं के विद्वानों, लेखकों और साहित्य का न कोई महत्व था और न मूल्य। वैदिक साहित्य की ज्ञान राशि के संचित कोष को उसने अज्ञान का भंडार कहा। उसके द्वारा प्रतिपादित शिक्षा प्रणाली में अँगरेजी भाषा को प्रमुख स्थान मिला। इस संबंध में उसकी टीप के कुछ उद्धरण इस प्रकार है :-

'भारतीय शिक्षा को ऐसे लोगों का वर्ग तैयार करना चाहिए जिनका भारतीयों से समान केवल खान-पान और वेशभूषा हो परंतु विदेशी शासकों के हित में वे ब्रिटिशों के समान विचार रखें। ऐसा वर्ग जो खून और रंग में तो भारतीय हो परंतु विचारों, आचार और विचारशक्ति में अँगरेज हों...' ऐसी अँगरेजी शिक्षा प्रणाली से भारत का अहित तो अवश्य हुआ परंतु कुछ हित भी हुआ। इस प्रणाली से भारतीयों को अपने प्राचीन गौरव का स्मरण हुआ। भारत के प्राचीन साहित्य की अनेक विद्वानों द्वारा समीक्षा की गई और वे पुनः प्रकाश में लाए गए। फलतः भारतीयों को उनसे परिचित होने का अवसर मिला। ब्रिटिश काल में राष्ट्रीय नेताओं और समर्थ व्यक्तियों ने प्रचलित अँगरेजी शिक्षा के विरोध में ऐसी संस्थाओं की स्थापना की जो प्राचीन वैदिक और बौद्ध कालीन पद्धतियों पर आधारित थीं- जैसे शांति निकेतन (विश्व भारती), गुरुकुल शिक्षा, अरविन्द आश्रम पांडिचेरी, विद्या भवन उदयपुर, राष्ट्रीय विद्यापीठ जैसे काशी और गुजरात विद्यापीठ, वनस्थली विद्यापीठ आदि।

> आशा की जाती थी कि स्वतंत्र भारत में वैदिक शिक्षा दर्शन का पुनः उदय होगा परंतु परिदृश्य निराशाजनक है। भौतिकता के पीछे भागने के कारण हमारा आत्मिक बल क्षीण होता जा रहा है। लौकिकता की दृष्टि से भौतिक साधनों से संपन्न लोग सुशिक्षित है, परंतु उनका जीवन उनके और देश के लिए बोझ या समस्या बना है। इन लोगों को अपना जीवन प्रवाह इस राष्ट्र के आध्यात्मिक सांस्कृतिक जीवन के गंगा प्रवाह से जोड़ना आवश्यक है।

गुरुकुल शिक्षा, प्राचीन आश्रम प्रणाली पर आधारित थी जिसके प्रवर्तक स्वामी दयानंद सरस्वती थे। वे वैदिक संस्कृति और साहित्य ज्ञान के पोषक थे। गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, भारत का सबसे बड़ा गुरुकुल है। इसमें संस्कृत, हिन्दी, वेदाध्ययन आदि प्राचीन और नवीन विषयों का शिक्षण दिया जाता है परंतु ऐसी संस्थाएँ इतने बड़े देश के लिए समुद्र में एक बूँद के समान हैं। स्वामी विवेकानंद भी वेदाध्ययन के हामी थे। उनका कहना था कि वेदांत एक दर्शन है जो मानव को नैतिकता सिखाता है और यही समस्त धर्मों का तत्व है। उनकी आकांक्षा थी कि वेदों के पठन-पाठन के लिए वैदिक विद्यालय स्थापित किए जाएँ परंतु उनके असमय निधन के कारण यह नहीं हो सका। जैसा कि पहले कहा जा चुका है हमारी प्राचीन शिक्षा की पृष्ठभूमि में वेद ही थे। धार्मिक दृष्टि से सर्वोत्तम काल वैदिक काल रहा है। उस समय धर्म मानव जीवन का आधार और प्रेरणा देने वाला था। इससे व्यक्ति और समाज का सर्वांगीण विकास होता था। वैदिक साहित्य प्राचीन धर्म विज्ञान पर आधारित था और वही जीवन पद्धति का एकमात्र सिद्धांत हुआ करता था।

ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली में वेदों की पृष्ठभूमि समाप्त हो गई। प्राचीन शिक्षा व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली से भारतीय वातावरण पर पाश्चात्य सभ्यता छा गई और प्राचीन शिक्षा की कुछ ही संस्थाएँ अवशेष रूप में बचीं। ब्रिटिश काल में देश की भौतिक उन्नति अवश्य हुई परंतु मानवीय गुणों की बलि चढ़ाकर।

आशा की जाती थी कि स्वतंत्र भारत में वैदिक शिक्षा दर्शन का पुनः उदय होगा परंतु परिदृश्य निराशाजनक है। भौतिकता के पीछे भागने के कारण हमारा आत्मिक बल क्षीण होता जा रहा है। लौकिकता की दृष्टि से भौतिक साधनों से संपन्न लोग सुशिक्षित है, परंतु उनका जीवन उनके और देश के लिए बोझ या समस्या बना है। इन लोगों को अपना जीवन प्रवाह इस राष्ट्र के आध्यात्मिक सांस्कृतिक जीवन के गंगा प्रवाह से जोड़ना आवश्यक है। अधिकांश लोग हमारी वैदिक पृष्ठभूमि से अनभिज्ञ हैं। विख्यात वकील और विधिवेत्ता श्री नानी पालखीवाला ने अपनी पुस्तक 'भारत की अनमोल विरासत' में इन लोगों को पीठ पर सोना ले जाने वाले गधे जैसे संबोधित किया है। वे कहते हैं-'अपनी पीठ पर क्या है, इसका ज्ञान गधे को कभी नहीं रहता। बोझ लेकर चलना ही उसे मालूम रहता है।'

खेद की बात है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद शासन की ओर से समाज को आध्यात्मिक सांस्कृतिक जीवन के प्रवाह से जोड़ने के समुचित प्रयास नहीं किए गए। दुर्भाग्यवश ऐसे प्रयत्नों पर राजनीतिकरण ही चढ़ता रहा। यह दुष्परिणाम है ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली का जिससे हमारी मानसिकता ऐसी बन गई है कि हम अपने गौरवशाली अतीत में झाँकने के प्रयास तक नहीं होने देते।

अब प्रश्न यह उठता है कि वर्तमान स्थिति में उबरने के लिए क्या किया जाए? माझा सरकारों के युग में शासन से किसी प्रकार की ठोस कार्रवाई की अपेक्षा नहीं की जा सकती। अतएव हमारी अनमोल विरासत का प्रचार-प्रसार करने का उत्तरदायित्व अशासकीय शिक्षण संस्थाओं, स्वयंसेवी संगठनों और मीडिया को निभाना पड़ेगा। भौतिक प्रगति को वास्तविक प्रगति समझ बैठने की हम भूल न करें। जब तकनीक नैतिक प्रगति के आड़े आ जाए तो समझना चाहिए कि स्वर्णिम भविष्य नहीं, सर्वनाश सन्निकट है और आत्मा को खास चौखट में भरने, झुंड के झुंड मुक्ति पाने की वर्तमान प्रवृत्ति की बीमारी की अचूक मारक दवा हमारी प्राचीन परंपरा में ही है। ■